ओम् शान्ति 6-9-07 मधुबन

(वतन के 12 दिन के दिव्य सन्देशों का संग्रह)

25 अगस्त 2007, शनिवार - 10.05 मिनट पर पररम आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी अपने भौतिक देह का त्याग कर अव्यक्तवतन वासी बनी। उन्हें 26 तारीख को आबू के चारों धामों की यात्रा कराई गई। 27 तारीख सोमवार 10.30 बजे तक लगभग 20 हजार भाई बहिनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये, तत्पश्चात शान्तिवन के मध्य बगीचे में उनके पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया। उसके पश्चात बापदादा को भोग लगाया गया, शरीर छोड़ने के 13वें दिन तक (6 सितम्बर तक) दादी जी को प्रतिदिन वतन में सन्देशियों द्वारा भोग स्वीकार कराया गया। बापदादा ने भिन्न-भिन्न सन्देशियों को जो दृश्य दिखाये तथा सन्देश दिये वह यहाँ लिख रहे हैं:-

ओम् शान्ति 27-8-07 मधुबन

1) दादी जी को अन्तिम विदाई देने के पश्चात, दोपहर में बापदादा और दादी जी के प्रति भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (मोहिनी बहन)

आज विशेष दादी जी के निमित्त भोग लेकर वतन में जाना हुआ, तो जाते ही क्या देखा, जैसे एक बच्चा होता है ऐसे ही बच्चे की तरह बाबा की गोद में बैठी हुई थी और बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रही थी। ऐसे बैठी हुई थी बाबा की गोद में, जैसे बाबा को छोड़ना ही नहीं चाहती थी, इतना बाबा को पकड़कर बैठी थी। जैसे मैं पहुंची तो मैंने बाबा को देखा फिर दादी को देखा, दादी बहुत मीठा मुस्करा रही थी, बहुत मीठी मीठी दृष्टि देते जैसे दादी मेरे मन के भाव को पढ़ रही हो कि पूछ रही है कि दादी आप कैसे यहाँ आ गई? और बाबा भी इतना ही मीठा मुस्करा रहा था जैसे कि मैं पूछ रही हूँ बाबा आपने दादी को इतना जल्दी कैसे बुला लिया? दादी को तो हम सबके साथ में आपके पास आना था लेकिन बाबा इतना मीठा मुस्करा रहा था जैसे कोई गुह्य राज़ कहना चाह रहा था लेकिन कह नहीं पा रहा था। मुझे कहा तुम अपनी दादी से मिलो और ऐसे लगा एक सेकण्ड के लिए बाबा गुम हो गया। और मैं दादी के सामने बैठी। दादी मीठी मीठी दृष्टि देते मुस्करा रही थी मैंने दादी को कहा कि आप कैसे चली आई? कैसे आपको बाबा ने बुला लिया। हम किसी के मन चित में भी नहीं था। इतनी बार इतना सीरियस होते हुए भी आप हमारे साथ रहीं, सदा मुस्कराती रहीं, सदा ही पार्ट बजाती रही और अभी तो आप बहुत अच्छी हो गई थी फिर बाबा ने आपको कैसे बुलाया। तो दादी जैसे सुनते भी नहीं सुन रही है, बिल्कुल उपराम थी और मुस्करा रही थी। हमने कहा कुछ तो दादी बोलो, तो दादी मुस्कराई और कहा बाबा ने बुलाया और मैं आ गई। अब बाबा ने क्यों बुलाया, यह तो आप बाबा से पूछो। लेकिन मैं तो बाबा के पास आकर बहुत खुश हूँ। बाबा मुझे सब कुछ दिखाता है, सब कुछ बताता है, तो मैंने कहा आपको यह नहीं बताया कि आपको क्यों बुला लिया है, अचानक बुला लिया है, लेकिन दादी जैसे आवाज से परे नयनों की दृष्टि से और चेहरे के मुस्कराहट से ऐसे लगता था कि दादी हर प्रकार से, हर तरह से उपराम है। तो मेरी आंखें भर आई, तो दादी बोली कि दादी तो सदा आपके पास है, आपके साथ है। इतने में बाबा आ गये। बाबा ने कहा बच्ची क्या रूहरिहान कर रही हो, मैंने कहा बाबा आपके पास सर्व बच्चों के संकल्प नहीं पहुंच रहे हैं? कि अचानक आपने दादी को बुला लिया, हमने तो समझा भी नहीं था कि ऐसे आप दादी को वतन में बुला लेंगे? कितनी आत्माओं के संकल्प चल रहे हैं बाबा, उन संकल्पों को समाधान करना तो आपका काम है ना। तो बाबा ने कहा बच्ची अभी तो तुम भोग लेकर आई हो ना, बच्ची ने भी 4-5 दिन से खाया नहीं है और आपने भी

नहीं खाया है। तो पहले तो बच्ची को खाना खिलाओ। तो भोग की थाली सामने रखी थी तो बाबा ने अपने हाथ से दादी को यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाया। बाबा ने कहा देखो यज्ञ निवासी आपको कितना प्यार करते हैं। तो मैंने कहा बाबा अभी मेरी समझ में नहीं आता है, आप क्या चाहते हो? इसमें भी क्या राज़ है? इतना सारा ब्राह्मण परिवार देश विदेश का सब दादी के स्नेह में इतने समाये हुए हैं, तो बाबा ने कहा बच्ची प्रकाश मणी है, इस मणी का प्रकाश चारों तरफ फैला भी है और भी फैलता जायेगा। यह एक ऐसी मणी है जिसका प्रकाश कभी लुप्त नहीं हो सकता है। इस मणी ने जो प्रकाश फैलाया है, वह प्रकाश सर्व आत्माओं को शान्ति शक्ति स्नेह की अनुभूति कराता रहेगा। तो मैंने कहा बाबा यह राज़ तो आपको खोलना होगा। सबको सन्तुष्ट करना होगा। तो बाबा ने कहा कि बच्ची बाबा हर बच्चे के दिल को जानता है और बाबा हर बच्चे को सन्तुष्ट भी करेगा। बाबा यह राज़ गुल्जार बच्ची द्वारा खोलेगा। फिर बाबा ने दादी को, दादी ने बाबा को और बाबा ने मुझे भोग स्वीकार कराया, उसके बाद बाबा ने मुझे बहुत प्यार किया और कहा बच्ची ड्रामा की हर सीन को साक्षी होकर देखो, बाबा और दादी सदा साथ है और सदा साथ रहेंगी। ओम् शान्ति।

2) 27-8-07 शाम के समय दादी जी के प्रति विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (दादी गुल्जार)

आप सभी की बहुत-बहुत दिल की यादें और प्यार लेते हुए मैं वतन में पहुंची, तो आज क्या देखा कि हमारी मीठी-मीठी दादी बाबा के साथ थी और सामने से दोनों ही हमें दृष्टि दे रहे थे। दादी बहुत शक्तिशाली स्वरूप में नज़र आ रही थी। मैं नजदीक जाकर पहुंची तो बाबा ने कहा ''आओ मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे आओ'', दादी मुस्करा रही थी। बाबा ने ऐसे हाथ किया, तो जैसे दादी एक तरफ से बाबा की बांहों में और मैं दूसरी तरफ से बाबा की बांहों में समा गई। फिर बाबा अपने साथ हम दोनों को अपने कमरे में लेकर चले और गद्दी पर बैठ गये और कहा बच्ची आप सभी की यादप्यार लेकर आई हो। तो दादी ने कहा आज तो मेरे लिए भी यादप्यार लाई होगी ना! मैंने कहा दादी आपके लिए तो सभी ने पदमापदमगुणा यादप्यार दिया है। सभी कह रहे हैं, कहाँ है हमारी दादी, कहाँ है दादी। तो बाबा ने कहा देखो, बच्ची की काफी समय से दिल में यही आशा थी कि मैं बाबा समान स्थिति का अनुभव करूं। जैसे ब्रह्मा बाबा इस शरीर के बंधन को छोड़कर अव्यक्त हो गये और अव्यक्त रूप से बाबा कितनी सेवायें कर रहे हैं, ऐसे मेरा भी पार्ट ब्रह्मा बाबा के समान हो। तो बच्ची की जो अन्दर में आशा थी उसको बाबा ने समय अनुसार पूरा किया। तो मैंने कहा बाबा अभी तो हमको नहीं लगता कि दादी ऐसे अव्यक्त हो जाए, हम सब तो दादी के साथ ही व्यक्त शरीर में होते भी अव्यक्त में सेवा करने चाहते हैं। तो दादी मुस्करा रही थी, बोला कुछ नहीं। तो बाबा ने कहा दादी की यही आशा थी कि जैसे बाबा ने हमको स्थूल धन की विल की, ऐसे ही मुझे ब्रह्मा बाप के समान स्थिति के अनुभव की विल करे। तो बाबा इस बच्ची को सिर्फ बच्ची नहीं कहता लेकिन यह मेरा तीन तख्त नशीन विशेष बच्चा है। गुरूभाई से भी बड़ा समान बच्चा है। इसलिए बाबा ने बच्ची के दिल की आश रखी। मैंने कहा बाबा सभी का उल्हना यही है कि कम से कम दादी बोलकर तो जाती। तो दादी ने मुस्कराकर कहा, ब्रह्मा बाप पूछ कर गया क्या! जैसे ब्रह्मा बाबा आये वैसे मैं भी आ गई। हमने कहा दादी आप समझती हो हम सब आपको छोड़ेंगे थोड़ेही। तो दादी मुस्कराई, बाबा जाने मैं जानूं, अभी तो मैं बाबा के पास आ गई हूँ, बड़े नशे से कह रही थी। उसके बाद बाबा ने समाचार पूछा - मैने कहा बाबा समाचार तो यही है कि भारत के कोने कोने में दादी की याद

समाई हुई है। ब्राह्मण परिवार के मन में तो है ही, लेकिन दादी ने जो भी सेवा की है, उन सेवा वाली आत्माओं के पास दादी के लिए कितना प्यार है, यह तो हम लोग देख ही रहे हैं। वी.आई.पी. हो, कोई भी हो दादी शब्द ऐसे बोलता है जैसे दादी उनकी दादी है। तो बाबा ने कहा यह है दादी का बचपन से लेके निर्विघ्न, निर्विकल्प निर्मल वाणी में रहने का फल। तो यह सूक्ष्म पुरुषार्थ भी क्या होता है, उसका प्रैक्टिकल स्वरूप, हर एक बच्चा साकार में देख रहा है कि बच्ची ने जो गुप्त पुरुषार्थ, दिल से पुरुषार्थ किया है, दिल से सभी को प्यार दिया है, सन्देश दिया है तो आज सन्देश देने वाले और प्यार लेने वाली आत्मायें सब दादी को ऐसे ही याद करती हैं जैसे ब्रह्मा बाप समान। तो ऐसे कहने के बाद मैंने कहा कम से कम दादी आंख तो खोलती ना, ऐसे ही दादी बेड पर गई। बाबा ने कहा वह बेड पर नहीं थी, लेकिन बाबा के वतन में ही थी। पेशेन्ट नहीं थी लेकिन सभी को पेशन्स में रहने की शिक्षा अपने स्वरूप से दे रही थी।

तो बाबा ने कहा तुम लोगों ने नोट किया कि इतनी बीमारियां होते हुए भी कोई दु:ख का संकल्प मात्र भी चिन्ह नहीं था। हमने कहा यह तो कमाल हम सब देखते थे, महसूस करते थे कि दादी को तकलीफ होगी, लेकिन दादी को पूछते थे - दादी आपको कुछ हो रहा है तो दादी कहती थी नहीं। तो बाबा ने कहा यह भी दादी शिक्षा दे रही थी कि पेशेन्ट होते हुए भी पेशन्स की स्थिति में रहना क्या होता है, दु:ख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी क्योंकि बचपन से जब से आई जन्मते ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की, जैसे आपकी मम्मा कहती थी कि बाबा ने कहा और मैंने किया, ऐसे ही मम्मा बाबा की सहयोगी, समान आत्मा रही। तो मैंने कहा बाबा ऐसी आत्मा की तो साकार में आवश्यकता है ना। तो बाबा ने कहा, अभी देखो बच्ची एक तरफ यह कहते, दूसरे तरफ दादी ने कर्मातीत अवस्था, कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थी। तो बाबा एकदम सहयोगी, समान बच्ची की दिल रखेगा या आपकी। हमने कहा हम तो बहुत हैं, दादी तो एक है, तो बाबा आपको बहुतों की दिल रखनी चाहिए। दादी ने कहा मैंने बाबा से एक मांगनी की है, मैंने बाबा से कहा है मुझे कुछ दिन वतन में ही रखो। जैसे ब्रह्मा बाबा शरीर छोड़ने के बाद भी विश्व की सेवा में बहुत-बहुत सहयोग दे रहे हैं। ऐसे मैं भी ब्रह्मा बाबा के समान अव्यक्त रूप में सेवा क्या होती है, वह अनुभव करने चाहती हूँ। तो बाबा ने कहा मैं मुरब्बी बच्चे के दिल की बात को पूरा न करूं यह हो ही नहीं सकता, पहले बच्ची, क्योंकि यह बच्ची सदा निर्विघ्न, सदा स्वमानधारी और सम्मानधारी मूर्ति बनकर रही है, कोई भी विघ्नके वश नहीं रही है, विजयी रही है, विजयी बनाया है, इसलिए बाबा बच्ची को गिफ्ट देता है, 12 दिन तक वतन में रखेगा। मैंने कहा फिर क्या होगा? तो बाबा ने कहा तुम देखने चाहती हो! इतने में क्या देखा एडवांस पार्टी के 10-12 मुख्य इमर्ज हो गये, जो भी विशेष गये हैं, दीदी, मम्मा, विश्व किशोर... वह ऐसे दादी को चिपक गये, कोई कुछ पकड़े, कोई कुछ पकड़े, कहने लगे दादी हमारी है, दादी हमारी है। हमने कहा यह तो नारा लगाने लगे, कहा आपके साथ इतना रही है, अभी दादी हमारी भी है, दादी को विशेष कार्य के लिए बाबा ने बुलाया है। तो दादी ने कहा मुझे इतना अच्छा लग रहा है वतन में, मैं सब कुछ देख रही हूँ, जहाँ जाने चाहूं, जिस सेन्टर पर जाने चाहूं सेकण्ड में पहुंच सकती हूँ, सबका चार्ट बाबा दिखा रहा है, सबके अन्दर क्या लहर है, वह भी देख रही हूँ। भक्त जो मुझे देवी के रूप में याद करते हैं, वह देवी के रूप में भक्त कैसे साधना करते हैं, वह भी बाबा दिखा रहा है और साइंस वालों को भी दिखा रहा है, कैसे साइंस वाले हमारी साइलेन्स पावर को जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर भी वह कौन सी शक्ति है जो शरीर को चलाती है और जो राज्य सत्ता है, वह भी कैसे चल रही है वह भी बाबा दिखा रहा है..। दादी ने कहा मुझे तो बड़ा मजा आ रहा है। हमने कहा हमको मजा

नहीं आ रहा है। दादी के कमरे में जाने से लगता है खाली-खाली, रिमझिम वाला स्थान खाली-खाली हो गया है। दादी ने मुस्कराया, बाबा ने कहा अभी बच्ची समय को समीप लाना है। बहुत दु:ख, भ्रष्टाचार अति में जा रहा है, और बच्चे जो हैं वह अभी भी छोटी-छोटी बातों में जैसे कोई गुडियों का खेल करे ना, ऐसे छोटी छोटी बातों में समय लगा रहे हैं, अभी भी अपना शक्ति रूप प्रैक्टिकल में लाने का सोचते हैं, लेकिन कर नहीं पा रहे हैं। मैंने कहा बाबा कोशिश तो सभी कर रहे हैं, बाबा ने कहा कोशिश कर रहे हैं, मैं भी बच्चों की मेहनत देख नहीं सकता हूँ। तो दीदी ने क्या किया, दीदी दादी को ऐसे हाथ में लेकर बोली, दादी हमारी सखी है ना, तो हमारे को भी साथ देगी ना। मम्मा तो ऐसी मीठी दृष्टि दादी को दे रही थी, जो एकदम जैसे समान स्थिति वाले होते हैं, एक दो में मिलते हैं तो कैसे मिलते हैं, मम्मा दादी को ऐसे दृष्टि दे रही थी। यह सीन भी पूरी हुई फिर बाबा ने कहा कि बच्ची यह भी आपने एक एक्जैम्पुल देखा, किस बात का? बाबा अभी बार-बार सभी बच्चों को कहते हैं, अचानक और एवररेडी। दादी की दोनों बातों में विशेषता देखी, एक एक्जैम्पुल दादी का देखा, कुछ याद आया? कोई बात याद आई? अपने शरीर से भी न्यारी हो गई। और साथ-साथ अचानक ही दादी चली गई। तो यह भी ड्रामा में बच्चों के लिए दादी का एक दृष्टान्त है कि जो बाबा ने कहा था, अचानक होना है और एवररेडी रहना है। तो दादी ने सभी को यह पाठ पढ़ाया है कि सभी का अगर दादी से प्यार है, तो सभी को एवररेडी माना बाप समान बनना है। देह भान से न्यारे कर्मातीत यानी कर्म करते भी न्यारे और प्यारे रहना है। तो दादी ने भी कहा कि जैसे ब्रह्मा बाबा कहते हैं कि बाप की जो भी शिक्षायें मिली हैं, पालना मिली है, उसका साकार स्थिति में रेसपान्ड दो। संकल्प में रेसपान्ड दो, वाणी में रेसपान्ड दो, कर्मयोगी स्थिति में रेसपान्ड दो। तो मेरी तरफ से सभी मेरी बहनों और भाईयों को कहना कि अगर मेरे से प्यार है तो प्यार की मैं यही निशानी देखने चाहती हूँ। जैसे ब्रह्मा बाबा कहता है प्यार की निशानी बाप समान बनो। ऐसे आप सभी कहते हो दादी से बहुत प्यार है, तो दादी भी दो शब्द बोलने चाहती है। दादी ने कहा कि जैसे मैंने बाबा को फॉलो करते स्वमान में रहकर के छोटे-बड़े को सम्मान दिया, दुआयें ली, आज दुआओं का इनाम बाबा मुझे दे रहा है। तो आप सभी भी यह दो शब्द स्वप्न में भी नहीं भूलना कि स्वमान में रहना है और हर छोटे-बड़े को सम्मान देके खुद भी परिवर्तन होना है और औरों को भी परिवर्तन करना है। यह मेरी तरफ से सभी मेरी सखियों को, मेरे भाईयों को सन्देश देना तो अभी बहुत टाइम बीत गया, अभी घर चलना है, तो दीदी ने बीच में ही कहा, यह तो मेरी बात आपने कह दी, मुझे तो घर बहुत याद आता था, मेरा तो गीत ही यही था कि अब घर जाना है। तो जो भी एडवांस पार्टी वाले थे, उन सबने भी कहा कि हम सब भी आपको कहते हैं, हम सब आपका इन्तजार कर रहे हैं, मुक्तिधाम का गेट भी आप सबका इन्तजार कर रहा है इसलिए दुआयें लो और यही सहज पुरुषार्थ करके अभी जल्दी-जल्दी वतन में आ जाओ। ऐसे सभी ने याद दी। फिर बाबा ने कहा कि आपको पता है कि दादी जब आई तब क्या क्या हुआ? तो बाबा ने दादी को कहा कि आप इन्हें बताओ। तो दादी ने कहा बाबा आप ही सुनाओ। तो बाबा ने कहा कि जब दादी वतन में पहुंची तो प्रकृति के पांच ही तत्वों ने सूक्ष्म स्वरूप से दादी का स्वागत किया और दादी बाबा के दिल तख्त पर आकर बैठ गई। तो बाबा ने कहा प्रकृति ने क्यों स्वागत किया? क्योंकि दादी की अन्तिम स्टेज प्रकृति जीत, मायाजीत थी। तो प्रकृति ने भी स्वागत किया और बाबा ने भी नयनों से स्वागत किया।

फिर तो एडवांस पार्टी वाले सब मर्ज हो गये। और बाबा ने यहाँ दादी जानकी और सब दादियों को, मोहिनी मुन्नी और कुछ भाईयों को इमर्ज किया, दादी ने सबको ऐसी मीठी दृष्टि दी, उसमें स्नेह भी था शक्ति भी थी, ऐसे लग रहा था जैसे सभी को दादी लाइट और माइट का दृष्टि से वरदान दे रही है। दादी के नयन खुले हुए थे लेकिन नयनों से

लाइट की किरणें निकल रही थी और जो भी वहाँ इमर्ज हुए तो जैसे दादी के नयनों द्वारा किरणें पहुंच रही थी और सभी ने दादी से बहुत अव्यक्त मिलन मनाया। ऐसे कहते बाबा ने कहा बच्ची अभी तो दादी मेरे पास है, आप सभी भी अव्यक्त स्थिति में दादी से वतन में मिलते रहना, लेकिन अव्यक्त रूप में आयेंगे तभी मिलेंगे। अगर दादी से प्यार है तो अव्यक्त रूप में दादी से रोज मिल सकते हो, यहाँ तो जितने आने चाहें उतने आ सकते हैं। ऐसे दादी ने भी याद दी और कहा बस मेरे यह दो शब्द याद रखना - स्वमान और सम्मान। ऐसे कहते बाबा ने हमको छुट्टी दी।

मैंने कहा दादी आपको मुन्नी और मोहनी बहुत याद दे रही हैं, उन्हों के नयन भर आते हैं। तो दादी ने कहा मेरे से मिलने रोज़ वतन में आ जाना। ऐसे कहते दादी ने सबको दृष्टि दी और कहा मेरी तरफ से सबको बहुत-बहुत समान बनने की दुआ देना। फिर तो मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

3) 28-8-07 दादी जी के प्रति भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (मोहिनी बहन-न्युयार्क)

आज जैसे बाबा के पास वतन में पहुंची तो बाबा ने बहुत-बहुत शक्तिशाली किरणों द्वारा सभी का स्वागत किया। मैं तो वतन में गई ही लेकिन देखा आप सभी भी जैसे वतन की ओर चल रहे हैं। आज वतन का जो दृश्य था उसमें जैसे पहले दो सिहांसन पर बाबा और मम्मा बैठे होते थे, ऐसे आज देखा कि बाबा और साथ में दादी जी बैठे थे, दोनों के यह भव्य रूप बहुत सुन्दर लग रहे थे। हमने बाबा से दृष्टि लेते हुए दादी से दृष्टि ली और कहा बाबा दादी के निमित्त आज भोग लाई हूँ। तो बाबा ने मुस्कराते हुए दादी की तरफ देखा और कहा कि आज आपके निमित्त भोग आया है।

बाबा ने कहा देखो, सभी बच्चों का ध्यान इस समय वतन की ओर है क्योंकि आप वतन में हो। तो बाबा ने भोग स्वीकार किया और दादी को स्वीकार कराया लेकिन जैसे दोनों किसी विशेष कार्य में, किसी वार्तालाप में व्यस्त हैं जैसे कोई प्लैनिंग चल रही है। तो मैं देखती रही, तो बाबा ने कहा दादी को व्यस्त रहना बहुत अच्छा लगता था। दादी का कोई संकल्प, श्वांस ऐसा नहीं होता था जो दादी विश्व सेवा के प्रति न सोचे। उनको कभी ऐसा नहीं होता था कि मेरे को अपने लिए कोई टाइम चाहिए। हम सोचते थे कि दादी थोड़ा समय विश्राम में होंगी लेकिन दादी तो वहाँ भी बिजी थी।

तो बाबा ने कहा दादी हमेशा प्लैन करती थी कि कैसे विश्व की सेवा हो लेकिन अभी दादी डबल प्लैनिंग में बिजी हैं। दादी को यज्ञ की पालना के साथ-साथ एडवांस पार्टी का जो कार्य चल रहा है। यज्ञ की पालना और उसका विस्तार और दूसरी तरफ राजधानी की स्थापना में दादी का विशेष पार्ट है। जैसे इतने वर्ष यज्ञ के पालना की निमित्त बनी, ऐसे राजधानी की जो स्थापना हो रही है, उसका प्लैन दादी को बाबा के साथ करना है।

एडवांस पार्टी तो बहुत खुश है ही। लेकिन दोनों डबल प्लैनिंग बाबा के साथ कर रहे हैं। तो आज के दृश्य की रूपरेखा इस प्रकार थी। मैंने कहा दादी आपको सभी ने बहुत-बहुत यादप्यार भेजी है। हमें ऐसे लगता है जैसे आप सभी के दिल में व्यापक हो। दादी ने बहुत प्यार से दृष्टि देते कहा कि आपको लग रहा है कि यह बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है लेकिन दादी को ऐसा नहीं लगता कि मेरा कोई पार्ट बदल गया है क्योंकि मैं तो बहुत समय से जो भी कार्य करती थी वह अव्यक्त स्थिति में ही रहकर करती थी। इसलिए पार्ट परिवर्तन की मुझे कोई फीलिंग नहीं आई। हमने कहा हम लोगों का संकल्प है कि इस कार्य में हम भी आपके साथी कैसे बनें। तो दादी ने कहा कि

बाबा के जो भी अनन्य बच्चे हैं सबके पार्ट में परिवर्तन तो आना ही है। तो जैसे दादी पार्ट बजा रही थी, ऐसे आप सभी भी अव्यक्त होते अपना पार्ट बजाओ तो इस प्लैनिंग में भी आप सभी अपना शेयर कर सकेंगे। जैसे दादी हमेशा कहती थी बाबा यह करवा रहा है, बाबा ने यह किया। तो कदम कदम पर आप लोगों को भी यही याद आयेगा कि दादी ने यह सिखाया। दादी का रूप कभी कोई पुरुषार्थ का नहीं रहा, सदा सम्पन्न रूप से पार्ट बजाती रही। इसी तरह आप सभी भी सम्पन्न और अव्यक्त रूप से पार्ट बजाओ तो अनुभव करेंगे और क्लीयर फीलिंग आयेगी कि हम भी दादी के साथ पार्ट बजा रहे हैं। फिर जो भी सारे विश्व का बेहद परिवार है सभी को दादी ने दृष्टि देते यादप्यार दिया और कहा जो भी मेरे सेवा साथी रहे, उनको और विशेष मोहिनी बहन मुन्नी बहन को याद दी, ऐसा दृश्य देखते मैं वापस साकार वतन में आ गई।

4) 29-8-07 दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश - (वेदान्ती बहन)

जैसे ही बाबा ने मुझे वतन में बुलाया तो मैंने क्या देखा कि बाबा और दादी दोनों आपस में कुछ मीटिंग जैसा कर रहे थे, तो जैसे ही मैं वहाँ पहुंची तो मुझे दादी ने कहा आओ आप भी आकर देखो क्या हो रहा है। मैंने कहा मैं तो भोग लेकर आई हूँ, तो कहा भोग तो स्वीकार करूंगी लेकिन देखो वतन में क्या हो रहा है। तो बाबा कुछ पेपर पर निशान लगा रहे थे लेकिन स्पष्ट नहीं था। दादी ने बोला मैं काफी समय से सेवा की यात्रा नहीं कर रही थी तो मुझे सोच चल रहा था कि कुछ काम मेरा रह गया है। तो बाबा मेरा प्लान बना रहा है कि अभी मुझे क्या-क्या करना है। मैने कहा दादी आपने दो दिन में क्या-क्या किया? तो जिस दिन मैं आई बाबा ने कहा आज आराम करो, तो जिस दिन आई उस दिन आराम किया और कल बाबा मेरे साथ था शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, मधुबन सब स्थानों के कोने कोने की बाबा ने मुझे यात्रा कराई मुझे बहुत अच्छा लगा कि सब बहुत अच्छा चल रहा है। मैने कहा दादी आज आप क्या करेंगी? तो कहा आज का प्लान बन रहा है। जो भी मेरे संकल्प बाकी रहे हैं वह बाबा पूरा करने के प्लैन बना रहा है।

बाबा ने कहा इन दिनों में बहुत कुछ होने वाला है। बड़े-बड़े साइंटिस्ट, विद्धान, बड़े बड़े लोगों के पास, दादी को सब तरफ जाना है। तो दादी ने बाबा को बिजी कर दिया है। दादी को बहुत फास्ट सब कुछ करना है तो वह प्लान बन रहा है। फिर बाबा ने भोग तरफ नज़र डाली और कहा दादी मीठी बच्ची आपको बहुत समय से मुन्नी मोहिनी ने तो बहुत प्यार से खिलाया है, अभी तुम जितना समय मेरे पास हो उतना समय मैं खिलाऊंगा। फिर दादी ने कहा मैं भी आपको खिलाना चाहती हूँ। तो दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार से खिला रहे थे। यह दृश्य बहुत सुन्दर लग रहा था। बाबा ने कहा बच्ची सभी दादी को बहुत याद करते हैं। यह बाबा को अच्छी तरह से मालूम है और दादी को भी मालूम है। दादी बहुत खुश होती है, दादी एक-एक जगह चक्कर लगाती है। दादी की दिल है, जितना समय दादी बाबा के पास ऊपर है उतना समय ऊपर भी चक्कर लगाओ। जितनी बार आ सको आओ और आकर देखो बाबा और दादी दोनों वतन में क्या क्या कर रहे हैं और अगर क्लीयर बुद्धि होगी तो टच होगा कि बाबा और दादी क्या कर रहे हैं। यह विशेष समय चल रहा है जिसमें बहुत कुछ होगा। उसके बाद आप बच्चों को थोड़ी मेहनत से बहुत सफलता का अनुभव होगा। ऐसे करते मुझे देखकर दादी ने कहा कि दादी को मालूम है कि दुनिया के बहुत कोनों में दादी का जाना रह गया है। अफ्रीका के कई कोनों में दादी नहीं गई है, अभी दादी बाबा को साथ लेकर वहाँ भी चक्कर लगायेगी। ऐसे कहते बाबा ने फिर ऐसा दृश्य दिखाया।

दादी जैसे वहाँ से प्लान बना रही थी और ऐसे लगा जैसे दादी कितनों से मिलने के लिए खड़ी है। फिर दादी जानकी, दादी गुल्जार, मोहिनी बहन मुन्नी बहन सब आये, मुन्नी बहन दादी को इतनी जोर से पकड़ा हुआ था जो छोड़ नहीं रही थी, फिर बाबा ने उसे छुड़ाकर अपने गले लगा लिया। फिर ऐसे लगा बाबा बहुत बल भर रहा है। फिर बाबा ने दोनों का (मुन्नी बहन मोहिनी बहन का) हाथ पकड़कर कहा कि आप लोगों को अभी बहुत काम करना बाकी है और बाबा करायेगा, फिर मुख्य भाई भी नम्बरवार आते रहे, फिर यह दृश्य पूरा हो गया। दादी और बाबा ही रह गये। मैं दृष्टि ले रही थी, तो दोनों कह रहे थे, जाकर सबको बहुत-बहुत याद देना। दोनों ने मेरा हाथ पकड़ा और मैं यहाँ आ गई। ओम् शान्ति।

5) 30-8-07 सतगुरूवार - बापदादा और दादी जी के निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश - (मोहिनी बहन - मधुबन)

आप सबका यादप्यार नयनों में समाकर जब बाबा के पास पहुंची तो क्या देखा कि बाबा एक लाइट की पहाड़ी पर ग्लोब के ऊपर दादी को साथ लिये खड़े हुए थे। और ग्लोब अन्दर से चमक रहा था, और घूम रहा था। तो मैं देखती रही कि कैसे बाबा विश्व की सर्व आत्माओं को अपना और दादी का अनुभव करा रहा था। तो मैं तो नीचे थी और बाबा और दादी ऊपर ग्लोब की चोटी पर खड़े थे तो जब ग्लोब मेरी तरफ आया तो मैंने देखा कि बाबा ने दादी ने मेरी तरफ देखा और मैंने देखा कि उन दोनों के नयनों से इतनी लाइट निकल रही थी जो मुझे ऐसे लगा जैसे मैं लाइट और प्यार के समुद्र में डूब गई हूँ। बाबा ने मुझे इशारे से अपने पास बुलाया और कहा कि देखो बच्ची मैं तुम्हारी दादी को सारे विश्व की परिक्रमा करा रहा हूँ क्योंकि यह विश्व की दादी है। तो दादी को सारे विश्व का पता होना चाहिए वैसे विश्व का चक्र लगाओ तो कितना टाइम लग जाता है लेकिन वतन में बाबा के साथ चक्र लगाने में सेकण्ड में सारे विश्व का चक्र लग जाता है और विश्व की आत्माओं को भी अनुभव होता है लेकिन यथा शक्ति वह इस बात को समझ पाते हैं कि यह फरिश्ते कौन हैं लेकिन देखा हुआ होगा तो समय पर यही चित्र उनके सामने आयेगा और कहेंगे कि हमने इनको देखा है, यह स्मृति ही उनको समय की और बाप के पहचान की याद दिलायेगी। फिर बाबा हम सबको लेकर नीचे आये और आकर बैठे। तो बाबा बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे और दादी भी बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे लेकिन कोई बोल नहीं रहे थे। थोड़ी देर बाद बाबा ने कहा बच्ची क्या सोच रही हो, क्या सन्देश लेकर आई हो तो मैंने कहा बाबा सब दादी को याद करते हैं, आपको याद करते हैं, कि बाबा ने आपको कैसे बुला लिया, और दादी को याद करते हैं कि अभी तो सेवा बाकी थी फिर भी दादी को बाबा ने क्यों बुला लिया। फिर बाबा मुस्कराये और कहा कि मम्मा ने यज्ञ स्थापना में अपना सब प्रकार का सहयोग दिया जो यज्ञ कहाँ से कहाँ तक पहुंच गया लेकिन इस बच्ची ने विश्व सेवा में सम्पूर्ण सहयोग दिया जो सारे विश्व में इस बच्ची ने बाप का सन्देश विश्व शान्ति का सन्देश फैलाया। तो यह बच्ची सेवा के निमित्त बनी, जो बाबा ने कहा, जैसा बाबा ने कहा, जब कहा बच्ची ने हाँ जी का पाठ पक्का किया, जी बाबा। और शुरू से लेकर लक्ष्य रखा कि मुझे बाप समान बनना है। और यह बच्ची का अन्दर ही अन्दर सदा पुरुषार्थ चलता रहा। बच्ची ने अपनी सत्यता पवित्रता प्यार शान्ति और रहम की दृष्टि से सारे ब्राह्मण परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखा जो दादी जैसे कहे, जो कहे कभी किसी बच्चे ने ना नहीं किया। अगर कभी किसी ने ना कहा भी हो तो बाद में पश्चाताप करता था कि मैंने ना क्यों किया फिर दादी के आगे आकर माफी मांगता था। तो इतना बड़ा कार्य बाबा ने इस बच्ची से कराया और बच्ची ने किया, निश्चय

के आधार पर बच्ची ने हर कर्म में हर सेवा में, हर श्वांस में, हर संकल्प में विजय प्राप्त की और बाप से अति प्यार होने के कारण बच्ची ने त्याग भी बहुत किया, कुर्बानी भी बहुत की, न अपने शरीर का, न पदार्थ का, न वैभव का.. कहाँ भी बच्ची की दृष्टि नहीं जाती थी। जैसे बाबा के गुणों की माला बनाते हैं ऐसे बच्ची के गुणों को भी याद करते हैं। मैंने कहा बाबा आज मैं भी एक माला लाई हो, जो दादी के गुणों की माला विदेशी बच्चों ने बनाई है। तो बाबा ने कहा माला का दाना बनने वाले बच्चों की ही माला बनती है। यह बच्ची तो माला का मुख्य मणका बाप समान है तो बच्ची के गुणों की माला क्यों नहीं बनायेंगी।

हमने कहा दादी को सब याद करते हैं और दादी की कॉटेज तो अभी सूनी लगती है तो बाबा ने कहा कि बच्ची ने पहले से ही बाबा को कॉटेज में बिठाया है तो उस कॉटेज में बाबा भी है, दादी भी है। तो हर एक वहाँ अनुभव करेगा कि दादी गई नहीं है वहाँ ही बैठी है और वहाँ रहकर ही सारा कार्य चला रही है। हमने कहा दादी जानकी को मुख्य बनाया गया है तो बाबा ने कहा देखो त्रिमूर्ति का गायन है, त्रिमूर्ति को पहले से ही आप दिखाते थे, दादी जानकी, दादी गुल्जार और दादी तीनों ही सदा साथ रहे हैं। तो दोनों दादियां बाबा के सामने इमर्ज हुई और दोनों कभी बाबा को कभी दादी को देख रही थी। दादी तो बाबा के दिल मे समाई हुई थी। इन दोनों दादियों को भी बाबा ने अपनी बांहों में ले लिया, इन तीनों को बाबा ने।

बाबा ने कहा जानकी बच्ची को तो अभी डबल सेवा करनी पड़ेगी। अभी तो डबल ताज हो गया। तो दादी ने कहा जो बाबा करायेगा, जैसे करायेगा, जो बाबा की आज्ञा मैं उस पर तत्पर हूँ। गुल्जार दादी के लिए कहा यह बच्ची तो डबल पार्टधारी है ही, सबकी भावना भी बच्ची में है, बापदादा का रथ भी है, ज्ञानी तू आत्मा बच्ची है। अभी दादी तो गुप्त है लेकिन गुप्त होते, देह के बंधन से न्यारी है, जैसे बाबा भी न्यारा है, तो कहाँ भी जाकर सेवा करके आ सकता है। ऐसे बच्ची की रोम रोम में भी सेवा का संस्कार भरा हुआ है, सेवा के बिना रह नहीं सकती है। तो समय को समीप लाने के लिए बाबा ने बच्ची को अपना साथी बनाया हुआ है। तो चारों तरफ चक्कर लगाकर बच्ची कार्य को सम्पन्न करेगी।

एक तरफ प्रकृति की हलचल, दूसरे तरफ माया के भिन्न स्थूल सूक्ष्म रूप, राजनीति की हलचल, साइंटिस्ट की हलचल यह सब हलचल अभी शुरू होगी क्योंकि अभी डबल पावर काम करेगी इसलिए बाबा बच्चों को भी इशारा देता है कि बच्चे भी सम्पूर्ण शक्ति से, एकाग्र बुद्धि से समय को समीप लाने वाले बनें। जो बाबा चाहता है कि सम्पन्न बनें सम्पूर्णता की ओर चले, तो जो कार्य मुश्किल लगता था अभी वह कार्य सहज होता जायेगा लेकिन बच्चों को थोड़ा अलर्ट रहना होगा फिर स्थापना का कार्य देखना कितनी जोर पकड़ता है। तो अभी दुनिया में भी हलचल बढ़ती जायेगी और आप लोगों को भी अचल अडोल स्थिति में एकनामी होकर चलना होगा।

दादी सुन भी रही थी और मुस्करा रही थी, मैनें दादी को कहा कि आप ऐसे कैसे आ गई। तो दादी ने कहा सभी ऐसे आये हैं, तो मैं भी ऐसे आ गई। फिर दादी ने कहा कि आप दोनों को दादी ने बहुत पालना दी है, जो दादी से सीखा है, पाया है उसको आपसे यही भासना आनी चाहिए, कि दादी वही प्यार पालना शक्ति दे रही है। तो आप दादी क्वाटेज को ऐसा ही बनाकर रखना, जो आने वाले ऐसा अनुभव करे। दादी तो एकदम निर्मोही थी और हमको भी ऐसा बना रही थी। दादी हमको दृष्टि से ऐसी शक्ति दे रही थी और कह रही थी कि ड्रामा की भावी समझ सदा निश्चिंत रहना। जो हो रहा है, उसमें कल्याण समाया हुआ है। हर बात में कल्याण देखते हुए यही समझना इसमें ही मेरा भी कल्याण समाया हुआ है। फिर बाबा ने दादी को भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा दादी आपको

बूंदी पूरी बहुत अच्छी लगती थी, तो आज वही भोग लाई हूँ, फिर मैंने अपने हाथों से दादी को भोग स्वीकार कराया।

तो सभी बच्चों को कहना कि जितना बाबा से सबका प्यार है उतना दादी से भी है, इसलिए सभी पहुंच गये। जैसे यह सबूत दिया ऐसे प्यार का सबूत देते, सेवा में सहयोग देते पावरफुल वातावरण बनाने में सहयोग देते रहेंगे तो जल्दी ही दुनिया का परिवर्तन शुरू हो जायेगा। तो आने वाले देश विदेश के बच्चों को खास यादप्यार देना। फिर दादी ने कहा खास मेरी यादप्यार उन्हें देना जिन्होंने दादी की बहुत समय सेवा की है, नर्सेज आदि ने, उनको बहुत बहुत याद देना और कहना कि सबने मेरी बहुत प्यार से सेवा की, सबको दिल की दुआयें। डाक्टर गुप्ता जी ने भी बहुत प्यार से सेवा की, डाक्टर साहू ने भी बहुत प्यार से सेवा की। तो गुप्ता जी को भी खास पदमगुणा याद और दिल की दुआयें देना और कहना कि सदा समय और स्वयं को देखते हुए सेवा में सफलता को प्राप्त करते रहना। दादी ने और बाबा ने मुन्नी बहन को भी बहुत बहुत याद दी बच्ची ने बहुत सेवा की है। तो बाप और दादी दिल की दुआयें दे रही हैं। दुआओं से सदा आगे बढ़ती रहेगी और दादी के प्यार की पालना का अनुभव कराती रहेगी। ऐसे यादप्यार लेते, भोग स्वीकार कराते मैं साकार वतन में आ गई।

6) 31-8-07 दादी जी के निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (शशी बहन)

आज आप सबकी मीठी मीठी याद लेते जैसे मैं वतन में पहुंची तो वहाँ का एक बहुत सुन्दर दृश्य देखा। सामने से एक पुष्पक विमान दिखाई दिया और उसके पीछे काफी सारे पुष्पक विमान थे जो बहुत स्पीड से आगे बढ़ रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे विमान का झुण्ड सामने आ रहा है और उनसे बहुत सुन्दर लाइट निकल रही है। कुछ समय के बाद एक पुष्पक विमान नीचे लैण्ड किया तो बहुत मीठी धुन बज रही थी। उस विमान से बाबा और दादी बाहर आये, दादी का रूप बहुत सुन्दर सजा हुआ दिखाई दे रहा था। जैसे ही बाबा ने मेरी ओर देखा तो मैं कभी बाबा से, कभी दादी से दृष्टि ले रही थी, उस समय इतनी लाइट फैल गई जैसे वातावरण बहुत शक्तिशाली बन गया। मैंने कहा बाबा आज दादी को कहाँ लेकर गये थे? तो बाबा ने कहा जब से दादी वतन में आई है तो एडवांस पार्टी के जो भी भाई बहिनें हैं, जहाँ दादी जाती है वहाँ सब दादी के साथ-साथ जाते हैं (दादी के पुष्पक विमान के पीछे एडवांस पार्टी वालों के विमान थे) दादी के साथ सभी बहुत गहन अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। उनको लगता है दादी एक गाइड के रूप में, कम्बान्ड रूप में कार्य कर रही है, वह देख देखकर खुश हो रहे थे।

फिर देखा कि एक बहुत सुन्दर मण्डप था, उसमें दादी जैसे देवी के रूप में खड़ी है, दादी के रूप भिन्न भिन्न दिखाई दे रहे थे। कभी देखती हूँ - दादी शक्ति रूप है, कभी देखती हूँ दादी के हाथ में झण्डा है, कभी देखती हूँ दादी के साथ बहुत से लोग हैं। तो बाबा ने कहा आज दादी ने क्या-क्या किया, आप देखेंगी? हमने कहा हाँ बाबा। तो बाबा ने दिखाया - जैसे सामने में विश्व का एक ग्लोब है, दादी उसको दृष्टि दे रही है और उस ग्लोब में परिवर्तन आ रहा है। तो बाबा ने कहा जो भी विश्व परिवर्तन के कार्य में लगे हैं उनको गाइडियन्स की, फोर्स भरने की जरूरत है, दादी उनमें विशेष फोर्स भर रही थी, गाइड कर रही थी, जिससे उनको लगता था कि अभी मुझे बहुत कुछ कार्य करना है। दूसरी ओर विश्व परिवर्तन के जो निमित्त हैं उनको दादी टच कर रही थी। तीसरा - दादी ने विश्व का भ्रमण किया तो जो आत्मायें खाली-खाली अनुभव करती हैं, उनके सामने दादी जाती और रहमदिल बनकर उन्हें कुछ न कुछ शक्ति, उमंग दे रही थी। फिर बाबा ने दादी को सहस्त्र भुजा वाला दिखाया, बाबा ने कहा दादी अकेला

कुछ नहीं करती लेकिन सबको साथ लेकर प्रेरणा दे रही है कि इतना बड़ा यह कार्य करना है।

फिर यह दृश्य पूरा हुआ तो दादी मेरे सामने थी, मैंने कहा दादी आप ऐसे कैसे चली आई, सभी आपको बहुत याद करते हैं। तो कहा मैं भी याद करती हूँ। लेकिन किस रीति से याद करती हूँ, मैं स्नेह के साथ जब बेहद के परिवार को देखती हूँ तो मुझे लगता है कि बाबा का हर बच्चा बेहद की बुद्धि वाला बन बेहद के कार्य में लग जाए। देखो अभी मैं बहुत स्पीड में चारों ओर चक्कर लगाती हूँ तो मैं चाहती हूँ कि मेरे सेवा के सभी साथी अपने को ऐसी ही स्पीड में लाकर हद की बातों से ऊपर उठें और यह कार्य तीव्रगति से करें। मैंने कहा दादी आपको सभी ने, विशेष मोहिनी बहन, मुन्नी बहन ने बहुत-बहुत याद दी है। जब मैं याद दे रही थी तो सभी दादियां और मुख्य भाई और जिन्होंने सेवा की है, सबको बाबा ने वतन में इमर्ज किया और दादी के सामने सभी अर्धचन्द्रमा के रूप में खड़े हो गये और ऐसे दादी ने हाथ किया जैसे सबको वरदान दे रही है। फिर बाबा ने कहा कि तुम लोगों ने दादी की सेवा भी बहुत प्यार से की है और दादी से बहुत कुछ पाया भी है। तो सेवा की या भाग्य जमा किया? पुण्य और शक्तियां जमा की? इतना बड़ा सौभाग्य प्राप्त किया जो विश्व महाराजन के साथ रहने का, वह वायब्रेशन कैच करने का, अपने अन्दर उन गुणों को धारण करने का भाग्य मिला। तो इस भाग्य को सदा अपने पास कायम रखना और उसी स्वरूप को धारण करना।

फिर बाबा ने खास सबको याद दी। विशेष मुन्नी बहन, मोहिनी बहन को कहा जैसे हर कार्य में सदा तत्पर रही, ऐसे ही तत्पर रहना। जैसे दादी अपने संकल्पों से, वाणी से सबको अनुभव कराती रही, ऐसे आप भी दूसरों को यही अनुभव कराना। फिर मैंने भोग सामने रखा तो बाबा ने दादी को अपने हाथों से भोग खिलाया और कहा दादी की सबको याद देना और कहना कि बेहद के कार्य में बेहद बुद्धि रख संगठित रूप में कार्य करते चलें तो बहुत हल्कापन और सदा सफलता का अनुभव करेंगे। ऐसे यादप्यार लेते मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।

7) 01-09-07 दादी जी के प्रति भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (रुकमणी बहन)

बाबा के पास भोग लेकर वतन में गई तो देखा सामने बाबा बैठे हैं, दादी को नहीं देखा तो सोच में पड़ गई कि दादी जी कहाँ हैं। मैंने कहा दादी जी कहाँ पर हैं? तो बाबा हमें तारामण्डल के बीच ले चला जहाँ पर अनेक प्रकार के तारे थे। किसी तारे में थोड़ी चमक थी, किसी तारे में ज्यादा चमक थी। तो बाबा बोले बच्ची देखो दादी कहाँ दिखाई दे रही है। तो मैं इधर-उधर देखने लगी, तो देखा चन्द्रमा के बाजू में एक तारा बहुत तेजोमय था। बहुत रोशनी, बहुत प्रकाश दिखाई दे रहा था। फिर मैंने कहा बाबा यही दादी है, जिस तारे से बहुत प्रकाश आ रहा है। तो बाबा ने कहा तारे, चन्द्रमा देखकर दादी कौन-सा गीत गाती थी, वह बताओ? तो मैं चुप रही, सोचने लगी कौन सा गीत होगा? फिर याद किया तो याद आया कि दादी जी यह गीत गाती थी – न ये चांद होगा, न ये तारे रहेंगे, हम हमेशा तुम्हारे रहेंगे....। यह याद आया तो दादी भी बहुत मुस्कराती रही। हमने दादी से कहा कि दादी जी आप आ गई, आपका स्थान दादी कॉटेज, कमरा, बाबा का कमरा सूना-सूना लगता है। तो दादी ने कहा कि कमरा, स्थान सूना नहीं लगता, बल्कि और ही शक्तिशाली बन जायेगा। तो बाबा बोले बच्ची जैसे पाण्डव भवन में जाते हैं तो बाबा का कमरा, झोपड़ी, शान्ति-स्तम्भ चारों धाम अपनी तरफ खींचते हैं। इसी प्रकार यह शान्तिवन दादी जी की तपस्या और प्रकाश का स्थान बन जायेगा। दादी का कमरा, बाबा का कमरा, कॉटेज का यह स्थान भी प्रकाशमय और

शक्तिशाली बन जायेगा। जिससे ब्राह्मण परिवार और आने वाली आत्माओं को प्रकाशमय और शक्तिशाली वायुमण्डल का खिंचाव होगा। यह अनुभव सब करेंगे। फिर दादी को सभी की मुन्नी बहन, मोहिनी बहन, ईशु दादी, अमृत भाई एवं सभी भाई बहनों की बहुत याद दी। तो दादी ने कहा सभी ने बहुत दिल से, प्यार से सेवा की है। तो सभी को मेरी दिल की दुआयें और याद-प्यार देना। फिर दादियों की याद-प्यार दिया तो बाबा बोले दादियों का प्यार आपस में अटूट है। बाप समान प्यार है। जैसे बाबा से प्यार नहीं टूटता ऐसे दादियों का आपस में बहुत-बहुत प्यार है क्योंकि बाबा ने बच्चों में कूट-कूट कर प्यार भरा है। तो आप सभी को भी ऐसा ही दादी समान, बाप समान प्यारा और मीठा बनना है। फिर हमने दादी के पास भोग की थाली रखी, फिर बाबा ने दादी को, दादी ने बाबा को बड़े प्यार से गरम-गरम भोग खिलाया और सभी को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। याद-प्यार लेकर मैं नीचे आ गई।
ओम् शान्ति

8) 02-09-07 - दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश – (मोहिनी बहन)

आप सबका याद-प्यार लेकर जब बाबा के पास वतन में पहुँची तो देखा कि आज वतन में न दादी जी दिखाई दे रही हैं, न बाबा दिखाई दे रहा है। तो मन में संकल्प आया कि बाबा को तो पता है कि इस समय भोग लेकर आते हैं, तो मैं इधर-उधर देखने लगी, कहीं दिखाई नहीं दिए तो मैं बाहर की तरफ चली तो बाहर कुछ दूर पर मैंने देखा कि बहुत सुन्दर बगीचा था। तो मैंने सोचा कि बाबा बगीचे में न हो। तो मैं बगीचे के अन्दर चलती रही। एक जगह देखा बहुत रंगबिरंगे फूल थे। वहाँ पर बाबा और दादी खड़े हुए थे। बाबा कुछ फूल देखता था, तोड़ता था और दादी के हाथ में पत्तियों का बहुत बड़ा थाल जैसा था जिसमें बाबा फूल रखता जाता था। तो मैं भी धीरे-धीरे करके बाबा के पास पहुँची और मैंने यह दृश्य देखा। जब दादी की दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी तो दादी मुस्कराई और कहा आपको भी फूल बहुत पसन्द है ना! मैंने हाँ करके गर्दन हिला दी। फिर बाबा फूलों को दृष्टि देता रहा और दादी से पूछा कि बच्ची यह कौन-कौन सा फूल है, तुम जानती हो इनकी विशेषता क्या है? तो दादी ने कहा बाबा मैं 5-6 फूलों को ही अच्छी तरह जानती हूँ। तो बाबा ने मुस्कराया कहा अच्छी बच्ची इनकी विशेषता बताओ। तो दादी ने कहा कि बाबा यह गुलाब का फूल है, यह मोतिए का फूल है, यह चम्पा का फूल है, यह कमल का फूल है... ऐसे मेरे से भी पूछा तो मैंने भी कुछेक के नाम बताये, फिर हम दोनों बाबा के तरफ देखने लगे। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्ची हर फूल की अपनी विशेषता है। फिर एक दूसरी थाली सामने रखी थी बाबा ने कहा इसके रूमाल को हटाओ। तो देखा उसमें भी बहुत सुन्दर-सुन्दर गुलाब के फूल रखे हुए थे। लेकिन वो गुलाब के फूल कोई कपड़े के, कोई कागज के, कोई मोम के थे। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल थे। थे सब गुलाब के, उसमें चमक भी बहुत अच्छी थी। रंग भी अच्छे थे, बने भी बहुत अच्छे थे। किसी-किसी में ऊपर से खुशबू भी डाली हुई थी। तो बाबा ने कहा कि दोनों प्रकार के फूल देखे। मैंने कहा जी बाबा। यह चैतन्य है, यह जड़ हैं। लेकिन जड़ भी ऐसे थे जैसे रीयल हों। तो बाबा ने कहा हर फूल की अपनी विशेषता है। यह देखो मोतिया बहुत छोटा है लेकिन इसमें खुशबू कितनी है। यह चमेली का फूल कितना नाज़ुक है, रखो तो खुशबू फैल जायेगी। यह चम्पा का फूल है, इसमें रंग भी है, रूप भी है, सुगन्ध भी है। कमल का फूल भी देखने में बहुत बड़ा, अच्छा दिखाई दे रहा था, लेकिन बिना सुगन्ध के था।

फिर बाबा ने कहा कि बच्ची बताओ इसमें सबसे अच्छा फूल कौन-सा है? तो मैं तो देखती रही, तो दादी ने कहा कि बाबा सबसे अच्छे दो फूल हैं। एक है चम्पा, दूसरा है गुलाब। फिर कहा दोनों की विशेषतायें सुनाओ। तो दादी

ने और हमने दोनों की विशेषतायें सुनाई। फिर बाबा ने एक गुलाब का फूल उठाया और उठाकर उसे घुमाने लगा। घुमाते, घुमाते फूल की पत्तियाँ जो हैं वह झड़ती जाती थी। अन्त में सब पत्तियाँ झड़ गई और बीच वाला बीज जो है वह रह गया। दूसरे फूल हिलाने से झड़े नहीं। तो बाबा ने कहा कि देखो इस फूल की कोई भी पत्ती आपस में चिपकी नहीं रहती है, अपने आप भी झड़ जाता है। तो इसकी विशेषता है कि न पुराने संस्कार, न पुराने सम्बन्ध, न पुराना स्वभाव कुछ भी नहीं रहता है, सब खत्म हो जाता है। केवल बीज ही रह जाता है क्योंकि आत्मा अमर है। बाकी यह देह भी नाश्वान है, देह के संस्कार भी परिवर्तन होते हैं, देह का स्वभाव भी परिवर्तन होता है... तो आपके दादी का गुलाब के फूलों से श्रंगार हुआ क्योंकि दादी की विशेषता यही रही कि दादी अपनी जीवन में सबकी प्यारी भी रही और सबसे न्यारी भी रही। न उसको अपनी देह से लगाव था, न देह के सम्बन्ध से, न पदार्थ से, न किसी पुराने संस्कारों से लगाव था। सब प्रकार से न्यारी, प्यारी थी। जैसे-जैसे कर्मातीत अवस्था के नजदीक आती गई यह सब सम्बन्ध खत्म होते गये, बस आप और बाप, यही स्मृति दादी की अन्त तक रही। और दादी का मुरली से भी प्यार, सेवा से भी प्यार और बाप से भी प्यार था। जब सेवा के समय कोई आता था तो दादी अपने आप आंख खोल देती थी, उस समय उसका पार्ट था नज़र से निहाल करने का, किसी को प्रेम की दृष्टि, किसी को शक्ति की दृष्टि दी, जो-जो इच्छा रखता था दादी के नयनों की दृष्टि से वह अपनी इच्छा पूरी करता था। फिर दादी उपराम हो जाती थी। दादी ने अन्त तक अपना सेवा का पार्ट बजाया और मुरली अन्त तक सुनती रही। तो दादी को सिवाए बाबा के और कोई भी याद नहीं था। एकदम प्यारी और उपराम रही, यह स्थिति आप सब बच्चों ने उनसे अनुभव की होगी। तो मैंने कहा बाबा इतनी अच्छी स्थिति थी तो आपने बुला क्यों लिया? दादी अच्छी थी, दिन प्रतिदिन अच्छी होती जा रही थी। तो बाबा ने कहा देखो बच्ची, आज मैं आपको एक राज़ बताता हूँ। मैंने आपकी दादी को बुलाया नहीं। जब यह मेरे पास आई भी तो मैंने इसको कहा कि जाओ बच्ची अभी तुम्हारी जरूरत है, सब आपको याद कर रहे हैं, जाओ। मैंने भेजा भी बच्ची को, बच्ची आई भी लेकिन जब बच्ची ने अपने पुराने तन को देखा तो देखते ही वो वापस आ गई और कहा बाबा यह तन मेरे लायक नहीं है। इस तन में कुछ है नहीं क्योंकि सारा शरीर अभी बेकार हो गया है। बोला, आप तो सर्वशक्तिवान की बच्ची हो, प्रकृति जीत हो, आप तो चला सकती हो ना। तो बोला नहीं बाबा, मैंने बहुत चलाया है और मैं समझती हूँ कि मेरी सेवा इस शरीर के द्वारा पूरी हो गई है। अब मैं नहीं जाऊंगी। तो दादी आई, दादी ने शरीर देखा, चारों तरफ देखा और विदाई ले ली। बोला मैंने भेजा पर दादी खुद नहीं चाहती थी तो बाबा क्या करता। बाबा मुरब्बी बच्चे को, समान बच्चे को आज्ञा नहीं दे सकता है। मैंने बच्ची के सामने तो केवल अपना विचार रखा, लेकिन बच्ची ने फाइनल कर दिया तो बाबा कुछ नहीं कर सकता है। लेकिन बच्ची ने जो सेवा की, बाप तो गुप्त रहा, पब्लिक के सामने नहीं आया लेकिन बच्ची ने तो देश और विदेश में जा-जा कर, चक्कर लगाकर बाप का नाम बाला किया और स्वयं का नाम भी बाला किया। आज बाबा देख रहा है कि देश विदेश चारों तरफ बच्ची के गुण, बच्ची की सूरत, सीरत, बच्ची के चरित्र कोई न कोई एक गुण, कोई न कोई एक शक्ति जिससे भी वह मिली है उसके पास में वह सौगात, वह अमानत के रूप में सुरक्षित है। बच्ची के याद की खुशबू, उसके ज्ञान की खुशबू, शान्ति की, प्यार की, न्यारेपन की खुशबू चारों तरफ फैल रही है। काई भी इस आत्मा को भुला नहीं सकता है। तो बाबा ने नहीं बुलाया लेकिन बच्ची खुद आई। इसलिए आप सब बच्चे ड्रामा की भावी समझ जो दादी ने कहा, जो दादी ने करके सिखाया, दिखाया, उस कदम के पिछाड़ी कदम रखते अपने आपको भी सम्पन्न, कर्मातीत बनाओ और जो बाबा और दादी का कार्य रहा हुआ है उसको भी जल्दी-जल्दी सम्पन्न करो क्योंकि अभी तो स्थापना के लिए नया फोर्स, डबल फोर्स हो गया है ना, वह कार्य करेगा। इसलिए बच्चों को कहना

कि अभी एलर्ट रहकर आलराऊण्ड सेवा में रहते अपना भी, अन्य आत्माओं का भी भाग्य बनाओ।

ऐसे कहते बाबा ने दादी को बहुत प्यार से यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाया तो दादी ने कहा क्या रोज़-रोज़ नई-नई चीज़ें बनाकर लाती हो। मैंने कहा दादी आप जो-जो खाते थे वह सब हम आपको वतन में खिलायेंगे। तो दादी ने कहा मैं तो सब खाती थी। तो मैंने कहा कुछ दिन बीमारी के कारण नहीं खाती थी ना, अभी तो हम आपको सब खिलायेंगे। फिर दादी मुस्कराई, बाबा ने दादी को खिलाया, फिर दादी ने मुझे अपने हाथों से खिलाया और कहा कि आप दादी के अंग संग रही हो, बचपन से लेकर अब तक जितनी पालना आपने ली है, अब उस पालना का रिटर्न आपको देना है और कहा कि मुन्नी को भी बहुत-बहुत याद-प्यार देना और कहना कि मुन्नी दादी के आगे थी, अभी मुन्नी, मुन्नी नहीं रही है लेकिन मुन्नी को बड़ा बनना है, लक्ष्मी बनना है। जो उसका नाम है, लक्ष्मी, ऐसे लक्ष्मी स्वरूप में रहकर दादी ने जो इतना बड़ा बेहद का यज्ञ सौंपा है, उस बेहद के यज्ञ से जैसे दादी के सामने पालना करती आई, ऐसे निमित्त बनके सबको सन्तुष्ट करना, यह दादी की आज्ञा सदा मानी है और अब भी यह दादी की आज्ञा है, उस आज्ञा पर तो आपको चलना ही है। यही आपके प्यार के निशानी है कि दादी के प्यार में जो दादी ने सिखाया, जो दादी ने जवाबदारी दी, उस जवाबदारी को अच्छी तरह से निभाना है। दादी जानती है कि दादी कॉटेज वाले चाहे भाई हैं, चाहे डॉक्टर हैं, चाहे बहनें हैं, चाहे माइयाँ हैं, सब बहुत याद करते हैं, क्योंकि इतना साल दादी इनके साथ में रही है। चाहे पाण्डव भवन हो, चाहे ज्ञान सरोवर हो, चाहे शान्तिवन हो, तो सबको दादी का विशेष याद-प्यार देना और कहना कि दादी सदा आपके साथ है, बाबा रोज़ मुझे तीनों स्थानों का, सभी स्थानों का चक्कर लगवाता रहता है, मैं आपसे अलग नहीं हूँ सदा आपके साथ हूँ और सदा आपके साथ रहूँगी। ऐसे कहते बहुत प्यार से दादी ने मुझे यहाँ भेज दिया। ओम् शान्ति।

9) 3-9-07 दादी जी के प्रति भोग तथा वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश (कैलाश बहन-गांधीनगर)

आज आप सभी भाई-बहिनों की याद ले करके बाबा के पास वतन में पहुँची, तो वतन में बाबा, दादी और बड़ी दीदी बाबा के दोनों हाथ पकड़ करके सामने से आ रहे थे। मैं तीनों को देखती रही तो बाबा ने बोला बच्ची, क्या देख रही हो? मैंने कहा बाबा आज दादी और दीदी दोनों आपके साथ हैं, आप सबके लिए मैं भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा ने बोला बहुत अच्छा बच्ची, और क्या लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी ने दादी जी को बहुत-बहुत याद दी है। तो मैं जब सबकी याद दे रही थी तो सभी भाई-बहिनें वतन में इमर्ज हो गये और कई ग्रुप में अलग-अलग इक्ट्ठे हो गये। मैंने कहा बाबा इनको अलग-अलग ग्रुप में क्यों रखा है? तो बाबा मुस्कराने लगे और बोला बच्ची, अलग-अलग नहीं हैं, सब बच्चे एक जैसे हैं लेकिन सबकी सेवा अलग-अलग है। एडवांस पार्टी की भी अपनी सेवा है। यह भी बहुत बड़ी सेवा के निमित्त हैं। फिर मैंने दादी को बोला, दादी आज आप कहाँ-कहाँ गये थे। तो दादी ने कहा आज मैं दीदी और बाबा को ले करके गयी थी। तो मैंने कहा दादी आप बाबा को लेकर गई थी, या बाबा आपको लेकर गये थे? तो दादी ने बोला मैं लेकर गयी थी। आज मैंने बाबा को बाबा का बेहद घर दिखाया कि बाबा देखो कितने सारे स्थान हैं, कितने डिपार्टमेंट हैं और उसमें कितने भाई बहिनें सेवा कर रहे हैं। तो आज बाबा, दादी और दीदी सब बच्चों के सिर पर हाथ घुमा रहे थे, दृष्टि से शक्ति भर रहे थे, और हिम्मत दे रहे थे कि बच्चों को हिम्मत से चलना है। फिर मैंने कहा दादी आज आपके लिए मधुबन से भोग लेकर आई हूँ। सभी ने आपको बहुत-बहुत याद दी है। तो दादी ने भोग खोला और कहा आज बहुत प्यार से सभी ने भोग बनाया है। आज मैं बाबा को यही बता रही

थी कि हरेक कितना हिम्मत से, कितना शक्ति से, कितना स्नेह प्यार से अपने अपने कार्यों को सम्भाल रहे हैं इसलिए बाबा हिम्मत का हाथ घुमा रहे थे। फिर बाबा ने दीदी को और दादी को बहुत स्नेह से भोग स्वीकार करवाया। बाबा ने खुद भी बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया और बोला कि बच्ची और कुछ कहा है किसी ने? हमने कहा नहीं बाबा, किसी ने कुछ कहा नहीं है। सिर्फ दादी को सब बहुत याद करते हैं, दादी बहुत याद आती है। ऐसे लगता है जैसे दादी यहाँ ही कहीं घूम रही है। तो बोला हाँ बच्ची, जो बोल रही हो ना वो ठीक है। दादी सब जगह चक्कर लगा रही है, सबके पास जा रही है। फिर मैंने कहा बाबा कल रात्रि को दादी जानकी जी कह रहे थे, कि एक बहन ने दादी से पूछा कि बाबा ने सन्देश में कहा कि दादी जब वतन में आई तो दादी का पांचों तत्वों ने स्वागत किया। तो वह स्वागत कैसे किया? तो बाबा आप बतायें कि कैसे सभी तत्वों ने दादी का स्वागत किया? तो बाबा मुस्कराने लगे और दादी को कहा कि आप इस बच्ची को बताओ कि पाँचों ही तत्वों ने कैसे स्वागत किया? तो दादी ने कहा बाबा आप ही बताओ। तो बाबा ने बोला देखो, बाबा तो बच्ची के पास हमेशा साथ साथ था, बच्ची को देखता भी था, बहुत अच्छी तरह से शक्ति भी भरता था। बच्ची के अन्दर यह संकल्प था कि मुझे यहाँ ही रह करके सेवायें करनी हैं, दूसरा जन्म नहीं लेना है, इसी ही जन्म से सेवा करनी है, लेकिन दूसरी ओर बच्ची को ऐसा भी लग रहा था कि अभी बाबा के पास जाने का समय आ गया है। अभी बाबा के पास रह करके सेवा करनी है। ऐसे ऐसे बच्ची सोचती थी तो जब बच्ची बाबा के पास वतन में आई तो बाबा ने कहा बच्ची तुम उस शरीर में भी रह सकती हो, तुम्हारी इच्छा हो तो तुम अपने शरीर में वापस जा सकती है। तो दादी ने पीछे मुड करके अपने शरीर को देखा तो इसे लगा कि इस शरीर से तो मैं कभी भी सेवा नहीं कर सकूंगी। अभी बाबा को तो बहुत जल्दी-जल्दी सेवा करानी है, यह शरीर तो ऐसी सेवा नहीं कर सकेगा, तो बाबा को ही दादी ने बोला बाबा, अब तो मैं आपके साथ सेवा करूँगी। तो बाबा ने सेकण्ड में बच्ची को अपने पास बुला लिया। फिर मैंने पूछा बाबा पाँच तत्वों ने कैसे दादी का स्वागत किया? तो बाबा मुस्कराते हुए बोले, जब बच्ची आयी तो पाँचों ही तत्व अपने फुल फोर्स के रूप में थे, बच्ची तेरे को पता है उस दिन बहुत गर्मी थी, हमने कहा हाँ बाबा, गर्मी तो थी, बहुत धूप थी और हम तो धूप में ही बैठे थे। तो बाबा ने बोला कि हर एक जो तत्व था वो अपने असली रूप में था और बच्ची जैसे जल, वायु, आकाश, पृथ्वी यह सब बहुत खुशी में थे। दादी को जहाँ भी कहीं घुमा रहे थे, रखा था, ले जा रहे थे, रख रहे थे, तो यह पृथ्वी भी बड़ी खुश थी और जब दादी की अन्तिम क्रिया की तभी भी इतना प्रकृति खुश थी कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ जो यह इतनी महान हस्ती की क्रिया मेरे ऊपर हो रही है। और अन्तिम क्रिया के लिए मेरा सहयोग लिया जा रहा है, तो प्रकृति भी बड़ी खुश थी। जैसे हवा थी वो भी बहुत खुश थी। हवा ने जैसे एकदम दादी को उड़ा करके बाबा के पास पहुँचा दिया और जो बरसात थी वो भी जैसे गुलाब जल छिकटते हैं, ऐसे दादी की अस्थियों को जब उठा रहे थे तो ऊपर से धीरे-धीरे बरसात हो रही थी। और बच्ची की जब अन्तिम क्रिया की तो जो अग्नि थी वो भी अपने असली रूप में दादी को सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करवाने के लिए पूरा सहयोग दे रही थी और आकाश भी बड़ा खुश हो करके दादी का स्वागत कर रहा था। एडवांस पार्टी वाली आत्मायें भी बहुत प्यार से स्वागत कर रही थी, और बाबा की गोद में बच्ची इतना स्नेह से समा गयी जैसे छोटा बच्चा माँ बाप की गोद में सो जाता है और समा जाता है, इसी रूप में दादी बाबा के पास पहुँच गयी। तो एक-एक तत्व जो था वो बहुत खुशियों में था, बहुत झूम रहा था और बहुत प्यार से एक-एक तत्व दादी का स्वागत कर रहा था।

फिर बाबा ने कहा बच्ची सभी बच्चों को जो भी जहाँ भी सेवा कर रहे हैं और जहाँ जहाँ भी बच्चों को सेवा के लिए रखा हुआ है, चाहे शान्तिवन है, ज्ञान सरोवर है, मधुबन है, म्युजियम है, हॉस्पिटल है, बहुत सारे डिपार्टमेन्ट

हैं, सब स्थानों के सेवाधारियों को दादी की बहुत-बहुत याद देना। आज तो दादी दीदी ने, बाबा ने अपने हाथों से बहुत प्यार से स्नेह से सबके सिर पर हाथ घुमाया है और दादी बहुत खुश हो रही है। फिर दादी ने बोला कि अभी तो मैं पूरे विश्व की आत्माओं के पास जा करके स्नेह शक्ति दे रही हूँ और जो बाबा ने हमें इतना कार्य दिया है, वो अभी बहुत जल्दी-जल्दी पूरा करना है। पहले तो शरीर फिर भी बाधा रूप था, जितना मैं चाहती थी उतना नहीं कर सकती थी, एक ही स्थान पर थी लेकिन अब मैं अनेक स्थानों पर जा करके सूक्ष्म शरीर से एक सेकण्ड में दूर-दूर तक सेवा कर सकती हूँ। मुझे बाबा के पास बहुत अच्छा लगता है। बाबा ने जो हमें शक्तियां दी हैं, उन्हें वतन में आ करके और भी अच्छी तरह से जानने को मिला और बहुत अच्छी तरह से बाबा सभी स्थानों पर सेवा करा रहा है। एडवांस पार्टी वाले भी सभी दादी को मिल रहे हैं और अपनी-अपनी सेवायें बता रहे हैं। और और भी प्रोग्राम बता रहे हैं कि कैसे कैसे अभी सेवायें करनी हैं। तो बस, वतन में वही सब कुछ चल रहा है। ऐसे बाबा ने दीदी ने, दादी ने सभी दादियों को भाई-बहिनों को बहुत-बहुत यादप्यार देते हुए हमें वतन से छुट्टी दी। ओम् शान्ति।

10) 04-09-07 दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (रुकमणी बहन)

आज जब बाबा के पास वतन में भोग लेकर पहुँची तो सामने बाबा और दादी को देखा। बाबा ने हमसे पूछा बच्ची आपके वतन का क्या समाचार है? सभी ठीकठाक है? तो हमने बाबा को सुनाया कि बाबा दादी जी के निमित्त कल माऊण्ट आबू में प्रोग्राम रखे गये थे, फिर कल शान्तिवन में भी प्रोग्राम है। मैं यह सुना ही रही थी तो बाबा ने कहा बच्ची और क्या समाचार है? तो हमने कहा बाबा और तो हमको मालूम नहीं है, वह तो आप ही सुनायेंगे। तो बाबा ने दादी का एक बहुत सुन्दर, बहुत बड़ा विशाल रूप दिखाया। उसमें देखा दादी को जैसे अनेक भुजायें हो गई और उन भुजाओं में से अनेक प्रकार की शक्तियाँ निकल रही हैं वह रूप और बड़ा-बड़ा होता गया। दादी की जो भुजायें थी उसके नीचे अनेक भाई बहिनें, बच्चे आते जा रहे हैं, वह बहुत बड़े स्थान पर जैसे अनेक भाई बहिनें दादी जी की भुजाओं के नीचे थे और दादी हाथ घुमा कर जैसे सबको वरदान दे रही थी। फिर देखा दादी एक बहुत बड़े ग्लोब पर खड़ी हो गई और देख रही है कि बाबा के इतने ढेर सारे बच्चे आते जा रहे हैं। बाबा और दादी इतने ढेर बच्चों को देख बहुत-बहुत खुश हो रहे थे। दादी के वरदानी हाथ से उन सभी को कुछ न कुछ सकाश, वरदान मिल रहा था। तो बाबा मेरे से पूछते हैं बच्ची क्या देख रही हो? तो मैंने कहा बाबा दादी को इतनी भुजायें हैं, और सभी भुजाओं से हर एक को कुछ न कुछ मिल रहा है। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्ची वर्तमान समय मनुष्य भगवान की तो पूजा करते है, परन्तु दुनिया में सबसे जास्ती देवियों की पूजा होती है, उसमें भी विशेष माँ का पाठ देवी के रूप में करते हैं। माँ के आगे भक्त कोई न कोई मनोकामनायें ले करके जाते हैं और माँ-माँ कह करके पुकारते हैं, तो भक्तों की वह आशायें पूरी होती हैं। तो दादी पहले हद में थी, साकार में थी। अभी बाबा ने विश्व के गोले पर दादी को बिठाया है। इसलिए दादी अब हद की नहीं रही, अभी विश्व की है। जो इतनी आने वाली आत्मायें है, भगत आत्मायें है, उनको समय अनुसार बाबा से तो वरदान मिलता ही है लेकिन अभी दादी को वतन में बुलाया है, तो इतनी आत्मायें जो रही हुई हैं उनको दादी के द्वारा अनेक वरदान, अनेक शक्तियाँ और सकाश मिलने वाली है। फिर बाबा ने कहा देखो बच्ची साकार में तो कई लोग जानते थे, कई नहीं जानते थे, ब्रह्माकुमारियों को भी नहीं जानते थे, दादी क्या है, यह भी नहीं जानते थे। पर दादी जब गई तो टी.वी. द्वारा साइंस के साधनों द्वारा कितनी आत्माओं की सेवा हुई, अज्ञानी आत्माओं ने भी दादी को देखा। वैसे शिवबाबा को तो कोई देख नहीं सकता लेकिन दादी का रूप

देख करके भी लोगों को यही लगता है कि वास्तव में ब्रह्माकुमारी संस्था कुछ है। तो दादी अभी बाबा के पास वतन में बैठी है, तो बाबा बच्ची के बहुत बड़े रूप से ऐसा ऊंचा कार्य करायेगा जो अभी तक नहीं हुआ है। तो दादी बाबा की यह रूहरिहान सुनकर बहुत मुस्करा रही थीं। फिर दादी का वह बड़ा-बड़ा रूप धीरे-धीरे मर्ज होता गया। फिर दादी को सामान्य रूप में देखकर मैंने बाबा को बोला बाबा आज मैं आपके लिए और दादी जी के लिए भोग लेकर आई हूँ। मैंने दादी और बाबा के आगे भोग रखा। तो बाबा ने भी बड़े प्यार से भोग स्वीकार किया और दादी को भी स्वीकार कराया। फिर हमने आप सभी की, खास सभी दादियों की, मुन्नी बहन, मोहिनी बहन, ईशू दादी की बहुत-बहुत भी याद दी। फिर हमने कहा बाबा दादी जी बिगर तो सारा कॉटेज तो क्या, पूरा शान्तिवन खाली-खाली सूना लगता है। तो दादी जी कहने लगी - जैसे कहते हो बाबा सदा साथ रहता है, ऐसे ही समझो दादी भी सदा साथ है। दादी आप सभी से दूर नहीं सदैव साथ है। फिर मैने मुन्नी बहन की विशेष याद दी। दादी जी कहने लगी कि मुन्नी सदैव दादी जी के अंग-संग रही, सेवा करती थी। अभी भी बाबा और दादी को साथ रखकर सेवा करती रहेगी। बिजी रहेगी। तो बाबा और दादी की दुआयें मिलती रहेंगी और दादी के साथ का भी अनुभव करती रहेगी। बाकी दादी तो आप सभी के साथ है ही। फिर मोहिनी बहन की याद दी तो दादी कहने लगी - मोहिनी तो फिर भी वतन में दादी से मिलकर जाती है। वह भी दादी जी के अंग संग रही है। जो दादी से सीखा है अब वही दादी के साथ की सभी को फीलिंग और अनुभव औरों को कराना है। फिर ईशु दादी की भी याद दी तो दादी कहने लगी - ईशू तो बाबा की दादी की याद में समाई हुई है क्योंकि बाबा की पालना और संग का अनुभव किया। इतने साल दादी के भी साथ रही तो अनुभव बहुत किये। अभी वही अनुभव औरों को कराने हैं। ऐसे कहते दादी जी ने सभी दादियों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया और मेरे को पूछा परदादी ठीक है? मैंने कहा ठीक है। मैंने कहा दादी जी आपकी और परदादी की व्हील चेयर एक साथ चलती थी, वह सीन बहुत याद आता है। दादी ने कहा हम सब दादियाँ सदैव साथ हैं, चले नहीं गये। सभी वतन (परमधाम) साथ जायेंगे। फिर दादी ने सभी पाण्डव भवन, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, म्यूजियम, सभी स्थानों के भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। भोग स्वीकार कराकर मैं नीचे वतन में आ गई।

11) 5-9-07 दादी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश (शशी बहन)

आज आप सबकी बहुत ही स्नेह भरी याद लेते जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो जिस प्रकार सन राइज़ का दृश्य होता है, वैसा दृश्य दूर से देख रही थी तो बहुत सुन्दर-सुन्दर किरणों से सुनहरा प्रकाश फैल रहा था। यह दृश्य देखते संकल्प किया कि बाबा और दादी कहाँ हैं! तो संकल्प करते ही सामने से दादी जी बाबा का हाथ पकड़कर आते दिखाई दी, जब सामने आये तो देखा सनराइज़ की किरणें दादी पर पड़ रही हैं, बाबा और दादी का बहुत सुन्दर रूप दिखाई दे रहा था। मैंने कहा बाबा यह दृश्य आज बहुत सुन्दर लग रहा है। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बाबा आज यह दृश्य क्यों दिखा रहे हैं? दादी ने विश्व के कोने कोने तक ज्ञान का ऐसा प्रकाश फैलाया है, जो 24 ही घण्टा जैसे बाबा के ज्ञान की ज्योति जग रही है। ऐसे बाबा से बात ही कर रहे थे तो देखा बाबा के हाथ में सूर्यमुखी फूल हैं, जिसे बाबा और दादी देख रहे हैं, मैं भी देखने लगी तो देखा जैसे उस पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो उन फूलों की पत्तियां निकलकर दादी के ऊपर ऐसे पड़ रही थी जो दादी का बहुत सुन्दर श्रृंगार हो रहा था। कोई पत्तियां मुकुट के रुप में सज जाती, कोई माला के रूप में। यह श्रृंगार बहुत सुन्दर और प्यारा लग रहा था। बाबा भी मुस्कराते रहे और मैं भी बहुत खुश हो रही थी कि दादी कितनी अच्छी लग रही है। तो मैंने कहा बाबा आज तो

दादी विश्व महाराजन के रूप में सजी हुई दिखाई दे रही है। तो बाबा ने कहा कि इस बच्ची ने हर आत्मा का कदम कदम पर श्रृंगार किया है, कई आत्मायें दादी के सामने आते ही बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव करती थी, कईयों ने दादी को देखकर अपने जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया। दादी का जीवन सबके सामने एक्जैम्पुल था। आज हर बच्चा अपने दिल के उद्गार दादी के सामने प्रकट कर रहा है। उसी से दादी का श्रृंगार हो रहा है। तो दादी ने कहा इतना सब क्यों कर रहे हैं? तो बाबा ने कहा बच्ची तुमने जो किया उसका यह बच्चे रिटर्न दे रहे हैं। तो दादी ने कहा मैंने तो कुछ भी नहीं किया है, मेरे सेवा साथियों ने बहुत कुछ किया है, उन्हें यह रिटर्न मिलना चाहिए। तो बाबा ने कहा तुम निमित्त बनी इन सबसे कराने के, तो हर एक आपका श्रृंगार कर रहे हैं। तो दादी कहे नहीं बाबा यह तो आपने किया है, बाबा के बच्चों ने किया है, साथियों ने किया है। तो दादी ने सभी सेवासाथियों को याद किया। जैसे दादी ने याद किया तो एक तरफ सभी मुख्य दादियां मुख्य भाई और एडवांस पार्टी वाले सब दादी के सामने आ गये और दादी को घेरकर खड़े हो गये और सभी कहने लगे हमारी दादी, हमारी दादी। तो दादी कहती है यह सब मेरे सेवा के साथी हैं, इन्होंने हर कार्य में मदद किया है। तो इतने में देखा सभी का रूप परिवर्तन होने लगा और सभी पर लाइट पड़ी तो हर एक विश्व महाराजन के रूप में दिखाई देने लगा।

फिर यह दृश्य पूरा हुआ तो दादी ने कहा आज उन सभी को विशेष याद कर रही थी जो बहुत समीप सेवा के साथी रहे हैं, उनकी खूशबू और स्नेह दादी के पास पहुंच रहा है। जब मैं साकार में थी और संकल्प करती थी तो सब सामने आ जाते थे, सभी ने सदा हाँ जी करके संगठित रूप में कार्य किया है, तो अभी भी अपने संगठन को और मजबूत करते हुए स्नेह के सूत्र में बंधकर बाबा और दादी को सामने रखकर हाँ जी का पाठ पक्का करते जायेंगे तो यह कार्य सहज सम्पन्न होता जायेगा और विश्व में बाबा का सन्देश जल्दी-जल्दी पहुंच जायेगा। अब कोई भी ऐसा न रहे जो कहे मुझे बाबा का सन्देश नहीं मिला है।

फिर मैंने कहा दादी आपके लिए भोग लेकर आये हैं तो दादी मुस्कराती रही, फिर दादी ने बाबा को भोग खिलाया और बाबा ने दादी को खिलाया। फिर बाबा ने दादी को कहा अपने सर्व साथियों को इमर्ज करो तो सभी दादियां मुख्य भाई बहिनें, मुन्नी बहन, मोहनी बहन भी इमर्ज हुई, तो दादी अपने हाथ से सबको भोग खिलाने लगी। तो मुन्नी बहन कहे मैं पहले खिलाऊंगी। तो दादी ने कहा तुम तो सदा खिलाती रही हो, आज दादी खिलायेगी। तो मुन्नी बहन ने कहा मैं तो आज दादी को जी भर करके खिलाऊंगी। फिर दादी ने सबको भोग खिलाया और जैसे सबको संकल्प से याद किया तो बहुत सारे भाई बहिनें इमर्ज हो गये और सब बाबा के सामने जैसे स्नेह में खोये हुए थे तो बाबा ने कहा देखो दादी तुम्हारी रचना कितनी स्नेही सुन्दर है। तो दादी ने कहा बाबा यह तो आपकी रचना है। तो बाबा ने कहा सचमुच हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में जो बाबा के प्रति दादियों के प्रति स्नेह है, इस स्नेह में सदा रहें तो बाबा और दादी समय प्रति समय बहुत अच्छा अनुभव कराते रहेंगे। इससे सदा निर्विघ्न बनते जायेंगे, उड़ते और उड़ाते रहेंगे। दादी ने विशेष तीन बातें कही 1- एक तो कहा बाबा से सच्चा स्नेह रखना 2- बड़ों को रिस्पेक्ट देना, 3- ब्राह्मणों के संगठन को मजबूत रखते हुए बाबा के कार्य में तत्पर रहना तो बहुत जल्दी विश्व में बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

फिर मैंने कहा दादी आपको सब बहुत याद करते हैं? तो दादी ने कहा सबकी याद मेरे पास पहुंचती है। अभी इस याद को स्वरूप में लाते हुए दूसरों को भी यही अनुभव कराना है। फिर तो मैं बाबा और दादी से दृष्टि लेते हुए वापस आ गई। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति सतगुरूवार 6-9-07 - सायं 7.30 बजे मधुबन

दादी जी की पधरामणी तथा दादी जी के महावाक्य और बापदादा का दिव्य सन्देश (दादी गुल्जार)

(दादी जी, कुछ समय के लिए गुल्जार दादी के तन में पधारी और सबको बड़ी-बड़ी भाकी में समाते अपना साकार रूप प्रगट किया, फिर सभी मुख्य भाई बहिनों ने दादी जी से हाथ मिलाया, दादी को यज्ञ का भोग खिलाया। दादी जी ने कुछ महावाक्य उच्चारे और वतन में उड़ गई:-

दादी जी बोली : सदा एक दो को सम्मान देते हुए श्रेष्ठ स्वमान में रहते स्वयं को और विश्व की आत्माओं को मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाते रहना। सर्व से स्नेही बनने का रूप प्रत्यक्ष करना। दुनिया में भी प्यार चाहिए, सच्चा प्यार। तो प्यारे रहना और सर्व को आत्मिक प्यार की अंचली देते रहना, यही हमारी याद है। अच्छा।

(दादी देश विदेश के सभी भाई बहिनों ने अपनी बहुत-बहुत भावनायें और याद भेजी है:)

वतन में तो पहले पहुंचता है। सबका याद प्यार मिलता रहता है, सभी ने प्यार का सबूत दिल से दिया है, इसके लिए मेरे तरफ से विशेष विशेष विशेष याद प्यार हो।

ऐसे कहते दादी वतन में उड़ गई।

वतन का दिव्य सन्देश: (गुल्जार दादी)

ओम् शान्ति। आज बाबा के पास गई तो आज बाबा दूर से मिला, दादी बाबा के साथ नहीं थी। मैंने बाबा से पूछा बाबा दादी कहाँ है? तो कहा उनको तो चारों तरफ से सभी ऐसे लगे हुए हैं जो छोड़ते ही नहीं हैं। इसीलिए बाबा बच्चों का स्वागत करने के लिए तो आयेंगे ही, इसलिए बाबा आ गया है लेकिन दादी को कोई छोड़ता नहीं है क्योंकि सभी को पता है कि आज दादी वतन से जाने वाली है। तो बाबा ने कहा तुम देखेंगी कैसे दादी की स्वागत हो रही है, मैंने कहा जरूर देखेंगी तो हम बाबा के साथ-साथ गये तो दादी बाबा को देखकर बहुत मीठा मुस्कराई, कहा बाबा आपने क्या खेल रचाया है? अपने आप करके छिपाते भी हो, यह क्या खेल रचा है, तो बाबा ने कहा मैंने खेल नहीं रचाया, बने हुए अनादि खेल में मैं भी खेल रहा हूँ, आप भी खेल रही हो मैं भी खेल रहा हूँ। तो मैंने क्या देखा, जैसे दादी को सभी ने छिपा ही दिया था, चार ही तरफ चार प्रकार के स्वागत करने वाले थे, एक तो पांच तत्व बिल्कुल सर्वेन्ट की रीति से जैसे तख्त पर बादशाह बैठता है ना, तो आसपास खड़े हुए होते हैं, ऐसे पांच तत्व एक तरफ थे, दूसरे तरफ एडवांस पार्टी वाले थे और तीसरे तरफ मधुबन यहाँ साकार वतन के कुछ ब्राह्मण थे और चौथे तरफ कुछ देवतायें थे। तो चारों तरफ चारों ही अपनी-अपनी तैयारी कर रहे थे। दादी देख-देख मुस्करा रही थी, बाबा ने कहा खूब मनाओ। बाबा भी देखते खुश हो रहे हैं क्योंकि मेरा नम्बरवन मुरब्बी बच्चा है। ब्रह्मा बाप तो फिर भी बाप है ना लेकिन बच्चे के रूप में मुरब्बी बच्चा मेरा दिलतख्तनशीन बच्चा है, खूब स्वागत करो। तो सभी ने अपने-अपने तरफ से जो कुछ करना था वह शुरू किया। वह तो मैंने सुनाया कि 5 ही प्रकृति के तत्व ऐसे ही खड़े थे और देवताओं ने बहुत सुन्दर तख्त बनाया था, जो हंस के रूप में था और उसमें इतने छोटे छोटे हीरे थे, मोटे मोटे भी नहीं थे, भिन्न भिन्न रंग के थे लेकिन ज्यादा लाल रंग के थे, वह तख्त ऐसे सजाया था जैसे परमधाम में आत्मायें चमकती हैं, ऐसे छोटे छोटे लाल-लाल हीरे ऐसे चमक रहे थे जैसे परमधाम में आत्मायें बैठी हैं। तो उन्होंने तख्त सजाया था और एडवांस पार्टी ने ताज बनाया था। कहा अभी तो दादी हमारी सिरताज है, बहुत खुश थे। मम्मा और

दीदी विशेष आगे थी, मम्मा और दीदी ने मिलकर दादी को ताज पहनाया। वह ताज भी लाइट का था लेकिन उसी लाइट में छोटी छोटी आत्मायें बिन्दी मिसल चमक रही थी और चौथे जो ब्राह्मण थे, ब्राह्मणों ने फिर दिव्य गुणों की, हीरों की माला बनाई थी, उस हीरे के बीच में एक एक गुण लिखा हुआ था, तो गुणों की बड़ी बड़ी माला पांव तक दादी को पहनाई। तो सभी ने दादी को सजाके तख्त पर बिठाया, ताज पहनाया और माला भी पहना दी, तो दादी बहुत चमक रही थी, क्योंकि सबमें छोटे छोटे हीरे थे, तो ऐसे लग रहा था जैसे दादी हीरों से सज गई है और ऐसे लगा जैसे दादी हीरों के बीच में बैठी हुई है फिर बाबा ने दादी को कहा ओ मेरे वफादार, फरमानवरदार, ईमानदार, सुपात्र और सबूत देने वाले बच्चे, बाबा ने आपको इनाम दिया है - आप कहाँ भी रहेंगी तो वतन में आती जाती रहेंगी। तो दादी ने कहा बाबा यही इनाम मुझे चाहिए। आप कहाँ भी मुझे भेजें मैं वतन में आती रहूंगी। तो बाबा ने कहा बच्ची न वतन को छोड़ना, न मधुबन को छोड़ना, दोनों ही स्थान पर आते चक्कर लगाते रहना। तो दादी ने कहा मैं तो निमित्त मात्र जा रही हूँ। तो बाबा ने सुनाया, दादी बच्चे के रूप में जायेंगी, लेकिन जहाँ जा रही है ना उनको स्वप्न में भी नहीं है कि बच्चा हो सकता है। भक्त हैं और थोड़े आधी लाइफ वाले हैं, बच्चे पैदा करने वाली लाइफ से थोड़ा बड़ी आयु के हैं। इसलिए उन्हों को स्वप्न में भी नहीं है कि हमारे को कुछ हो सकता है लेकिन प्रवेशता की हलचल होती है ना, जब हलचल होगी तब उन्हों को आयेगा कि यह क्या हो रहा है। अभी तो दादी वतन में थी, जब हलचल होगी तब सोचेंगे कि यह क्या है! बाबा ने दिखाया कि वह माता और भाई बहुत भक्त हैं। पानी भी पीते हैं तो भगवान को पहले अर्पण करके पीते हैं, ऐसी उनकी नौंधा भक्ति है। दादी जब पैदा होगी तो ऐसे समझेंगे कि भगवान ने कोई अवतार भेजा है, बच्चा नहीं अवतार भेजा है, कुछ होने वाला है तो इस रूप में दादी जायेगी और एडवांस पार्टी को, साइंस वालों को और आप ब्राह्मण आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करने की सदा प्रेरणा देती रहेगी। जहाँ भी साइंस वाले मूंझते हैं - क्या होगा, कैसे होगा, होगा या नहीं होगा, उन्हों को ऐसा स्पष्ट कर देगी जो वह तीव्र तैयारी करें, ब्राह्मण भी क्यों क्या नहीं करेंगे, बस करना ही है और एडवांस पार्टी तो नाच रही थी, मम्मा और दीदी दोनों तरफ से दादी की बांह पकड़े कह रही थी - दादी अभी तो हम कमाल करके दिखायेंगी। ऐसे रूहरिहान चल रही थी। फिर हमने बाबा को भोग दिखाया और कहा बाबा आज सबने दादी के लिए तिलक, मिश्री सब भेजी है। तो बाबा ने कहा मैंने बच्ची को स्वीट मिश्री खिला दी है, इलायची की खुशबू भर दी है और बच्ची को स्वमानधारी बनाए स्वमान में स्थित करने का तिलक लगा दिया है, ऐसे करके दादी को एकदम सजा दिया है। फिर जो भी चारों तरफ के वतन में थे सब डीप साइलेन्स में ऐसे बैठ गये एकदम जैसे अशरीरी स्थिति में निराकारी स्वरूप में स्थित थे और दादी तख्त पर ही बैठी थी लेकिन उठके बाबा के सामने आई, बाबा ने ऐसे कहा बड़ा भाई है, इसलिए खड़े-खड़े गले लगेंगे। तो बाबा गले लगे, दृष्टि दी और दादी हम सबके बीच से वतन से चली गई। हमसे भी दादी ने पूछा कैसे हो, दादी जानकी के लिए पूछा कैसे है, भारी तो नहीं हो गई है? बाबा ने कहा सभी मेरा रूप समझ करके सम्मान देना और स्वमान के अधिकारी बनाना। ऐसे दादी जानकी से खास मिली, कैसे हो, कैसे हो, जैसे दादी मिलती है, ऐसे मिली भी और लास्ट में बाबा ने ऐसे विदाई दे दी। मेरे से भी मिली मेरे को कहा कि तुम सभी का हालचाल पूछती रहना।

(दादी यहाँ आई थी ना) यह मुझे पता नहीं। दृष्टि सबको प्यार से दी। कुछ ग्रुप ग्रुप थे, लेकिन दादी की दृष्टि बहुत प्यार की थी। बस दादी को सम्मान और स्वमान यह दो शब्द बहुत याद हैं। बार बार यही शब्द रिपीट कर रही थी। ओम् शान्ति।